www.shodhpith.com ISSN (Online): 3049-3331

Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)

Volume: 2 Issue: 2 March-April 2026

आधुनिक डिजिटल युग में पुस्तकालय की भूमिकाः मुद्दे एवं चुनौतियाँ

सत्यवान साहू

अतिथि व्याख्याता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनषाला, षहीद महेन्द्र कर्मा विष्वविद्यालय बस्तर, जगदलपुर

Article Info: *(Recieved- 10/02/2026, Accept- 15/3/2026, Published- 08/04/2026)*

DOI- 10.64127/Shodhpith.2026v2i2002

सार

आधुनिक समाज में पुस्तकालय ज्ञान–संरक्षण, ज्ञान–प्रसारण, शिक्षा–संवर्धन एवं अनुसंधान–सहायता का एक जीवित केंद्र है। डिजिटल युग में सूचना–संप्रेषण प्रौद्योगिकी, नेटवर्क–आधारित समाज एवं वैश्वीकरण ने इसकी भूमिका को गतिशील, बहुआयामी एवं तकनीक–निर्भर बना दिया है। इस अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक डिजिटल युग में पुस्तकालय की विविध भूमिकाओं (शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सूचना प्रसारण, धार्मिक–आध्या. त्मिकता, मनोरंजन आदि) का विश्लेषण करना, साथ ही सूचना गोपनीयता, कॉपीराइट–अधिकार, सूचना–सुरक्षा एवं डिजिटल–नैतिकता जैसे मुद्दों एवं चुनौतियों पर प्रकाश डालना है। इसमें गुणात्मक–विश्लेषणात्मक विधि के माध्यम से विभिन्न द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पुस्तकालयों के लिए तकनीकी, नै. तिक–कानूनी एवं संचालन–सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जो विश्वसनीय, सुरक्षित एवं समावेशी ज्ञान–केंद्र के रूप में पुस्तकालय के भविष्य–विकास में सहायक हैं।

कीवर्डः डिजिटल युग, सूचना गोपनीयता, सूचना सुरक्षा, कॉपीराइट, सूचना प्रसार, पुस्तकालय पेशेवर, सूचना नैतिकता।

प्रस्तावना–

आधुनिक समाज के सदस्य के रूप में हम सभी इसकी विविध आवश्यकताओं जैसे शिक्षा, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक न्याय एवं सांस्कृतिक संरक्षण से परिचित हैं। इनमें शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक सूचित, ज्ञानवान एवं जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करती है, जो प्रगति एवं उन्नति में योगदान दे सकता है। इस प्रक्रिया में पुस्तकालय एक मौलिक सामाजिक एवं सूचना संस्था के रूप में कार्य करता है। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का संग्राहक एवं संरक्षक है, ज्ञान को वर्गीकृत, सूचीबद्ध एवं विवरणित करके उसका मूल्य–संवर्धन करता है तथा सार्वजनिक संस्थाओं के रूप में उपयोगकर्ताओं को समान पहुँच प्रदान करता है।

डिजिटल युग में सूचना–प्रौद्योगिकी ने समाज को गहराई से बदला है। इसने सूचना के संप्रेषण, प्रसारण एवं भंडारण को नई अवधारणाओं के साथ जोड़ा है। पुस्तकालय भी इन परिवर्तनों से बाध्य होकर अपनी भूमिका

में परिवर्तन कर रहा है। अब यह केवल पुस्तक–भंडार नहीं, बल्कि एक जीवित ज्ञान–हब, डिजिटल लाइब्रेरी एवं ज्ञान–मध्यस्थ के रूप में सक्रिय है। इस संदर्भ में सूचना गोपनीयता, कॉपीराइट–अधिकार, सूचना–सुरक्षा, डिजि. टल–नैतिकता एवं पुस्तकालय व्यवसायों की चुनौतियाँ का प्रमुख विषय बन गए हैं।

साहित्य समीक्षा–

रवि एवं कुमार (2004) ने सूचना सुरक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि डिजिटल वातावरण में डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता बनाए रखना पुस्तकालयों के लिए एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकालयों को उन्नत सुरक्षा तकनीकों और नीतियों को अपनाना चाहिए।

दासगुप्ता (2009) ने भारत में भविष्य के पुस्तकालयाध्यक्षों की तैयारी पर अध्ययन किया और बताया कि डिजिटल युग में पुस्तकालय व्यवसायों को नई तकनीकों और कौशलों को अपनाना आवश्यक है। उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के पाठ्यक्रमों में सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेवाओं को शामिल किया जाना चाहिए।

बेहरा व सिंद्य (2011) ने डिजिटल युग में भारतीय पुस्तकालयों के संग्रह विकास से संबंधित समस्याओं और चुनौतियों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि वित्तीय संसाधनों की कमी, तकनीकी अवसंरचना की सीमाएँ और प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी पुस्तकालयों के विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं।

जुशेन्वी (Juchnevie) (2014) ने बदलते समाज में पुस्तकालय की भूमिका का अध्ययन किया और बताया कि डिजिटल तकनीक के कारण पुस्तकालयों की पारंपरिक भूमिका में परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि आधुनिक पुस्तकालयों को सूचना सेवाओं के साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देना चाहिए।

प्रियन्का श्रीवास्तव (2022) के अध्ययन में डिजिटल लाइब्रेरी के विकास और भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा की गई है, जिसमें तकनीकी परिवर्तन और सूचना प्रबंधन की जटिलताओं को प्रमुख मुद्दा बताया गया है।

उद्देश्य

- आधुनिक डिजिटल युग में पुस्तकालय की विविध भूमिकाओं (शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सूचना प्रसारण, धार्मिक–आध्यात्मिकता, मनोरंजन आदि) का समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- डिजिटल वातावरण में सूचना गोपनीयता, सूचना–सुरक्षा एवं कॉपीराइट–अधिकार जैसे मुख्य मुद्दों की प्रकृति, प्रभाव एवं उपयोगकर्ता–परिणाम का अध्ययन करना।
- पुस्तकालय व्यावसायिकों के सामने उभरती तकनीकी, व्यवस्थापन–आधारित एवं नैतिक–कानूनी चुनौतियों की पहचान करना।

पद्धति विधि

इस शोध–अध्ययन में गुणात्मक–विश्लेषणात्मक विधि अपनाई गई है। अध्ययन–स्रोत प्रायः द्वितीयक प्रकृति के हैं, जिनमें निम्न पुस्तकालय विज्ञान एवं सूचना विज्ञान से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय शोध–पत्र, पत्रिकाएँ एवं वैज्ञानिक लेख आदि शामिल हैं।

पुस्तकालय की भूमिकाएँ

शिक्षा में पुस्तकालय

शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालय एक जीवित विद्यालय कक्ष के रूप में कार्य करता है। यह औपचारिक एवं अना. ैपचारिक शिक्षा दोनों को समर्थन प्रदान करता है। छात्रों, शोधकर्ताओं एवं वयस्कों को विश्वसनीय, नवीनतम एवं वैश्विक ज्ञान तक पहुँच प्रदान करके उनके ज्ञान आधार को व्यापक बनाता है। पुस्तकालय ज्ञान निर्माण, अनुसंध ाान एवं स्व अध्ययन के लिए उचित पर्यावरण बनाता है, जहाँ उपयोगकर्ता जटिल विषयों पर खोज, विश्लेषण एवं चिंतन कर सकते हैं। डिजिटल युग में पुस्तकालय ऑनलाइन जर्नल, ई किताबें, वर्चुअल कक्षाएँ, डिजिटल आर्काइव

एवं दूरस्थ शिक्षा प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षण अध्ययन प्रक्रिया को सरल, लचीला एवं सीमाओं से मुक्त बनाता है। इस प्रकार पुस्तकालय ज्ञान संचार, आलोचनात्मक चिंतन एवं डिजिटल साक्षरता को एक साथ बढ़ावा देता है।

अनुसंधान में पुस्तकालय

पुस्तकालय अनुसंधान प्रक्रिया का अविभाज्य अंग है। शोधकर्ता के लिए विद्यमान ज्ञान, पहले के शोध पत्र, थीसिस, रिपोर्टें एवं डिजिटल डेटाबेस तक पहुँच आवश्यक है। आधुनिक पुस्तकालय विश्व स्तरीय जर्नल, ई जर्नल, डिजिटल आर्काइव, विशिष्ट स्रंगह एवं डेटा सेट उपलब्ध कराकर शोधकर्ता को वैश्विक ज्ञान प्रवाह से जोड़ता है। साथ ही, यह उपयोगकर्ता शिक्षा, डेटा विश्लेषण, संदर्भ प्रबंधन एवं उद्धरण प्रणाली जैसी कौशल सेवाएँ प्रदान करता है। इस प्रकार पुस्तकालय शोध गुणवत्ता, नवीनता एवं वैज्ञानिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सांर्स्कृतिक गतिविधियों में पुस्तकालय

पुस्तकालय सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण धुरी बिंदु है। यह भाषा, साहित्य, कला, इतिहास एवं संस्कृति से संबंधित दस्तावेजों, पुस्तकों, अभिलेखों, फोटोग्राफ आदि को संग्रहीत करके भविष्य की पीढ़ियों के लिए धरोहर बनाए रखता है। साथ ही, यह सांस्कृतिक कार्यक्रमो, कविता गोष्ठी, नाटक प्रदर्शन, प्रदर्शनियाँ, वार्तालाप सत्र आदि का आयोजन करके सामाजिक सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देता है।

सूचना प्रसार में पुस्तकालय

पुस्तकालय "सूचना केंद्र" के रूप में कार्य करता है। शोधकर्ता, शिक्षक, छात्र, प्रशासक, उद्योगपति, किसान, श्रमिक आदि सभी उपयोगकर्ताओं की आवश्यकतानुसार विश्वसनीय एवं समय पर सूचना पहुँचाकर उनकी निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाता है। चयनात्मक सूचना प्रसारण, ऑनलाइन अलर्ट, वर्चुअल रेफरेंस आदि सेवाएँ इस प्रक्रिया को और भी कुशल बनाती हैं।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं में पुस्तकालय

पुस्तकालय धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक कृतियों को संग्रहित करके नैतिक चरित्र निर्माण, आंतरिक शांति एवं बहु धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ाने में सहायता करता है। यह अंधविश्वास से ऊपर उठकर चिंतन परक धार्मिक समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मनोरंजन एवं अवकाश में पुस्तकालय

पुस्तकालय उपन्यास, बाल कथाएँ, यात्रा वृत्तांत, पत्रिकाएँ, कॉमिक्स, बुक क्लब, फिल्म प्रदर्शन आदि के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को स्वास्थ्य प्रधान एवं ज्ञान आधारित अवकाश समय अनुभव कराता है। सार्वजनिक पुस्तकालय सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों का भी एक सुरक्षित मंच बनाकर नकारात्मक गतिविधियों को रोकने में योगदान देता है।

डिजिटल युग में पुस्तकालय की भूमिका

डिजिटल युग में पुस्तकालय की भूमिका विस्तृत हो गई है। यह प्रलेखीकरण, सूचना विश्लेषण, डेटा रिपैके. जिंग, डिजिटल आर्काइव, वेब आधारित संसाधन प्रबंधन आदि के माध्यम से ज्ञान निर्माण की नई दिशा खोज रहा है। डिजिटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन कैटलॉग, मोबाइल ऐप, सोशल मीडिया आधारित सूचना सेवाएँ आदि के माध्यम से यह व्यक्तिगत एवं संस्थागत उपयोगकर्ताओं को 24X7 ज्ञान पहुँच प्रदान करता है। साथ ही, यह विशेष डेटा सेट, रिपोर्ट पैकेज एवं व्यवस्थि सूचना सेवाओं के माध्यम से नवीनतम व्यावसायिक एवं शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है।

सूचना गोपनीयता एवं उपयोगकर्ता अधिकार

डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ता के डेटा के रूप में नाम, पता, ई मेल, खोज इतिहास, लॉग डेटा आदि को स्वचालित रूप से संग्रहित करती है। इन डेटा का दुरुपयोग या चोरी से उपयोगकर्ता की गोपनीयता एवं व्यक्तिगत सुरक्षा पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसलिए पुस्तकालय को डेटा संरक्षण नीतियाँ, एन्क्रिप्शन, सुरक्षित सर्वर, लॉग प्रबंधन एवं नैतिक दिशानिर्देशों के माध्यम से उपयोगकर्ता अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। साथ ही, डिजिटल साक्षरता शिक्षा के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को पासवर्ड सुरक्षा, गोपनीयता सावधानी एवं ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जागरूक करना पुस्तकालय की उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका है।

सूचना सुरक्षा एवं नेटवर्क प्रबंधन

सूचना सुरक्षा का अर्थ है डेटा को अनधिकृत पहुँच, चोरी, हैकिंग, वायरस, ट्रोजन, डेटा हटाने या गलत रूप से संशोधित किए जाने से बचाना। यह केवल "कंप्यूटर सुरक्षा" से भिन्न है, क्योंकि इसमें सिर्फ सिस्टम सुरक्षा नहीं, बल्कि डेटा अखंडता, गोपनीयता एवं उपलब्धता का संयुक्त प्रबंधन शामिल है। आधुनिक पुस्तकालय फायरवॉल, एंटी वायरस, डेटा बैकअप, नियमित सिस्टम अपडेट, आपदा प्रबंधन योजनाओं, बहुस्तरीय प्राधिकरण प्रबंधन एवं सुरक्षित ऑनलाइन प्रणालियों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालय कर्मचारियों एवं संस्थागत डेटा की सुरक्षा करता है। साथ ही, यह आंतरिक जोखिमों जैसे अनुचित पहुँच, चोरी, लेन देन के लिए गलत उपयोग आदि से बचाव के लिए पारदर्शी नीतियाँ एवं आंतरिक नियंत्रण तंत्र विकसित करता है। इस प्रकार पुस्तकालय एक "सुरक्षित डिजिटल ज्ञान हब" के रूप में कार्य करता है, जो उपयोगकर्ता को न केवल ज्ञान पहुँच प्रदान करता है, बल्कि उनके डेटा विश्वास एवं साइबर सुरक्षा की भी गारंटी देता है।

कहृपीराइट, बौद्धिक संपदा एवं नैतिक उत्तरदायित्व

डिजिटल युग में उपयोगकर्ता डिजिटली पत्रिका,लेख, ई बुक्स, वीडियो, ऑडियो, प्रजेंटेशन आदि की प्रतियाँ आसानी से डाउनलोड, कॉपी या प्रिंट कर सकते हैं। ऐसे क्रियाओं में बिना अनुमति प्रतिलिपि एवं वितरण बौद्धि क संपदा अधिकारों का उल्लंघन माना जाता है, जिसके परिणामस्वरूप विधिक एवं वित्तीय जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं। पुस्तकालय को यह सुनिश्चित करना होता है कि उपयोगकर्ता डिजिटल सामग्री का सही उपयोग ही करें अर्थात इसमें शैक्षणिक, गैर व्यावसायिक, व्यक्तिगत उपयोग के लिए सीमित अंश प्रतिलिपि, उद्धरण नियमन, बिना व्यावसायिक लाभ के उपयोग आदि अर्न्तगत आते है। इसके लिए पुस्तकालय ई जर्नल एवं डिजिटल सामग्री हेतु वैध लाइसेंस समझौतों का पालन करता है, उपयोगकर्ताओं एवं पुस्तकालयाध्यक्षों दोनों को कॉपीराइट नियम, लाइसेंस शर्तें एवं डिजिटल नैतिक संहिता के बारे में नियमित शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करता है तथा डिजिटल दायित्व जागरूकता अभियान चलाता है। इस प्रकार पुस्तकालय न केवल ज्ञान पहुँच को बढ़ावा देता है, बल्कि बौद्धिक रचनाकारों के अधिकारों की रक्षा करके नैतिक कानूनी पर्यावरण भी विकसित करता है।

डिजिटल वातावरण में पुस्तकालय व्यावसायिकों की चुनौतियाँ

वैश्वीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विशाल सूचना विस्फोट को जन्म दिया है। अब उपयोगकर्ता सिर्फ पुस्तकों पर निर्भर नहीं, बल्कि वेबसाइटों, सोशल मीडिया, वीडियो, ऑनलाइन फोरम आदि पर भी ज्ञान अर्जित करते हैं। इस परिदृश्य में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका भी गहन बदलाव से गुजर रही है। वे अब केवल प्रलेख संरक्षक नहीं, बल्कि "सूचना प्रदाता", "ज्ञान मध्यस्थ" एवं "सूचना सलाहकार" बन गए हैं। उन्हें उपयोगकर्ता की जटिल, विशेष उद्देश्य वाली सूचना आवश्यकताओं को समझकर सही डेटाबेस, डिजिटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन कैटलॉग, विशेष विषय संग्रह, डेटा विश्लेषण एवं :चयनात्मक सूचना प्रसारण जैसी सेवाओं का प्रयोग करना होता है।

इसके लिए पुस्तकालय व्यावसायी को निम्न क्षेत्रों में कौशल विकास करना आवश्यक है –

1. डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम, इंटरनेट आधारित संसाधन प्रबंधन, डेटाबेस खोज एवं ऑनलाइन कैटलॉग प्रबंधन।
2. सूचना विश्लेषण, डेटा पुनर्पैकेजिंग, रिपोर्ट निर्माण एवं विशेष उद्देश्य वाली जानकारी सेवाएँ।

3. उपयोगकर्ता शिक्षा एवं डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण की जानकारी का मूल्यांकन, सूचना स्रोतों की विश्वसनीयता का मूल्यांकन, डिजिटल गोपनीयता आदि।

4.नैतिक कानूनी जागरूकता– कॉपीराइट अधिकार, डिजिटल दायित्व, डेटा संरक्षण एवं उपयोगकर्ता अधिकार से संबंधित ज्ञान।

इस प्रकार डिजिटल वातावरण पुस्तकालय व्यवसायीयों के लिए लगातार सीखने, नवीन दृष्टिकोण एवं व्यावसा. यिक क्षमता विकास की चुनौती लेकर आया है, जिसे उन्हें अपनी संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्तर संरचना में शामिल करना होगा।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने पुस्तकालय को एक गतिशील, बहुआयामी एवं तकनीक निर्भर ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित कर दिया है। यह सिर्फ भौतिक पुस्तकों का भंडार नहीं, बल्कि विश्व व्यापी ज्ञान प्रवाह का एक जीवित महासागर बन गया है, जहाँ उपयोगकर्ता अतीत की विरासत से जुड़कर वर्तमान की तकनीक से भविष्य की रचना करते हैं। इस युग में पुस्तकालय ने कई नए क्षेत्रों में भूमिका ली जैसे– शिक्षा को दूरस्थ एवं चौबीसों घंटे की सुविधा, अनुसंधान को वैश्विक डेटा स्रोत, सांस्कृतिक गतिविधियों को डिजिटल मंच, मनोरंजन को ज्ञान आधारित सामा. जिक बंधन, धार्मिक आध्यात्मिकता को चिंतन परक पर्यावरण आदि। साथ ही, इसने सूचना गोपनीयता, कॉपीराइट अधिकार, सूचना सुरक्षा एवं डिजिटल नैतिकतर के रूप में 'ज्ञान रक्षक' की भूमिका के साथ व्यक्तिगत डेटा की रक्षा, अवैध प्रतिलिपि से बचाव, हैकिंग वायरस से सुरक्षा, उपयोगकर्ता शिक्षा के रूप में जागरूकता अपनाई।

डिजिटल वातावरण ने पुस्तकालय व्यावसायीयों के लिए चुनौतियाँ अधिक की हैं। जिसमें तीव्र सूचना विस्फोट, जटिल डिजिटल सिस्टम, नैतिक कानूनी दायित्व, उपयोगकर्ता की गुणवत्ता उम्मीदें आदि शामिल है। इन्हें "संरक्ष. क" नहीं, बल्कि "सूचना तकनीक सलाहकार", "साइबर नैतिक निर्देशक" बनना पड़ा। भविष्य में पुस्तकालय को अपनी तकनीकी नींव (सुरक्षित डिजिटल नेटवर्क, एन्क्रिप्शन, बैकअप), नैतिक कानूनी नीतियाँ (कॉपीराइट अनुपालन, डेटा संरक्षण, उपयोगकर्ता अधिकार), एवं व्यवसायिक क्षमता (डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम, उपयोगकर्ता शिक्षा, डेटा विश्लेषण) को निरंतर अद्यतन करना होगा।

इस प्रकार, आधुनिक डिजिटल युग में पुस्तकालय अपनी केंद्रीय भूमिका बनाए रखते हुए "विश्वसनीय, सुरक्षित एवं समावेशी ज्ञान केंद्र" के रूप में विकसित होता रहेगा, जो शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक संरक्षण एवं नागरिक सशक्तिकरण में निरंतर योगदान देगा।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Behera, R. K., & Singh, M. (2011). Problems and challenges of collection development in the digital age. Library Philosophy and Practice, 2011, 1–10.
2. Bhardwaj, A., & Tyagi, S. (2025). Digital right management: The challenges of electronic resource accessibility for blind and visually impaired users in libraries. Journal of Indian Library Association, 61(01), 156–165.
3. Bhardwaj, R. K., & Madhusudhan, M. (2019). Open access initiatives in digital libraries: Issues and challenges. DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 39(2), 78–86.
4. Capurro, R. (2001). Information ethics for and from Africa. International Information & Library Review, 33(2–3), 113–120.
5. Dasgupta, A. (2009). Preparing future librarians in India: A vision for LIS schools of the 21st century. In Proceedings of the World Library and Information Congress: 75th IFLA General Conference and Council, Milan, Italy, 23–27

August 2009.
6. Gaur, R., & Dutt, M. (2024). Digital scholarship and digital humanities: Exploring intersections, challenges, and opportunities. Journal of Indian Library Association, 60(02), 271–283.
7. Ghosh, M., & Das, A. (2016). Information and communication technology in libraries: A new facet in digital era. International Journal of Digital Library Systems, 7(1), 15–28.
8. Juchnevic, K. (2014). Libraries and the changing society: Challenges and opportunities. International Journal of Information Science and Management, 12(2), 45–52.
9. Kaur, S., & Satija, M. P. (2007). Collection development in digital environment: Trends and problems. SRELS Journal of Information Management, 44(2), 139–155.
10. Khanna, J. K. (1987). Library and society. Ess Ess Publications.
11. Krishnan, Y. (2020). Digital transformation in libraries: Trends and case studies. Information and Library Science Today, 5(2), 85–102.
12. Kumar, V., & Reddy, S. (2018). Adoption of RFID technology in Indian libraries: A case study. DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 38(4), 256–263.
13. McGarry, K. (1981). The changing context of information: An introductory analysis. Clive Bingley.
14. Panigrahi, P., & Nayak, K. (2017). Virtual reality in libraries: Emerging applications and trends. New Review of Academic Librarianship, 23(4), 340–357.
15. Ravi, N., & Kumar, A. (2004). Information security management in digital libraries. DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 24(3), 25–30.
16. Shera, J. H. (1976). Introduction to library science: Basic elements of library service. Libraries Unlimited.
17. Shrivastava, P. (2022). Digital libraries: Challenges for 21st century. IP Indian Journal of Library Science and Information Technology, 7(1), 32–35.
18. Uzuegbu, C. P., & McAlbert, F. U. (2013). Digital librarians and the challenges of open access to knowledge: The Nigerian perspective. Library Philosophy and Practice, 2013, 1–9.
19. Varalakshmi, R. S. R. (2018). Role of mobile technology in modern libraries. International Journal of Library Science and Information Management, 4(1), 32–41.
20. चौहान, एस. (2020). पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में डिजिटल युग की भूमिका. ग्रंथालय विज्ञान शोध पत्रिका, 36(2), 101—116.
21. गुप्ता, डी. के. (2017). ई—रिसोर्सेज का प्रबंधन और लाइसेंसिंग. भारतीय ग्रंथालय पत्रिका, 57(1), 12—18

Cite this Article-

'सत्यवान साहू', 'आधुनिक डिजिटल युग में पुस्तकालय की भूमिकाः मुद्दे एवं चुनौतियाँ' Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:02, March-April 2026

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."